

॥ ॐ श्री साईराम ॥

॥ ॐ श्री साई लोकनाथाय नमः ॥ (४३)

त्रैलोक्यना नाथ होवावाणा श्री साईने अमारा नमस्कार छे.

भगवान श्री सत्य साई बाबा छे लोकनाथ छे. संपूर्ण (समस्त) विश्वना स्वामी छे. आपणा अंतःकरणना स्वर्ग, पृथ्वी अने पाताण अेवा त्रए लोका जो कल्पवामां आवे तो, भगवान बाबा आ त्रए लोकना स्वामी छे.

जगतपति भगवान बाबाने अेकवार प्रश्न पूछवामां आव्यो के, आपनो अवतार आ पृथ्वी पर थयो अने योगी ' अरविंद पण अहींयां ज छे.' त्यारे अेक क्षणनो पण विलंब न करता भगवाने जवाब आप्यो" ते व्यक्तिनाथ छे ज्यारे हुं लोकनाथ छुं."

अेनो सूक्ष्म अर्थ अेवो के, जे जे व्यक्तियोगी अरविंदने भजे छे, तेमना ते पालक छे, परंतु ईश्वरना कोई पण रुपनुं स्मरण करवावाणाना स्वामी 'नाथ' छे अेटले ज ते ' लोकनाथ' छे. आ प्रश्न पूछनाराने कदाय भबर नहीं होय के, स्वामीना जन्मना बीजे ज दिवसे योगी अरविंदजुअे जाहेर कर्युं हतुं के आजे परमेश्वरनुं पृथ्वी पर आगमन थयुं छे. स्वामी चिन्मयानंदजुअे पण भगवानबाबानी महानताना गुणगान गाता कह्युं छे के-"हुं थोडांक) अमुक लोकने शीभवुं छुं, ज्यारे स्वामी समस्त जन समुदायने उपदेश करे छे."

आमांना ' समुदाय ' शब्दनी व्याप्ति धीरे धीरे वधीने समस्त विश्वमां प्रसरी छे. विश्वभरना अनेक भिन्नधर्मना लोकने अेवो अनुभव थयो छे के, ते जे भगवाननी आराधना (साधना) करे छे. ते भगवान बाबा सुधी पहोचै छे.

स्वामी कहै छे के-"हुं कोईपण अेक स्थण पूरतो मर्यादित नथी. मने कोईपण अेक ज नामनुं बंधन नथी. मारी पासे 'माडुं अने ताडुं' अेवुं कांई ज नथी. तमे जे नामथी मने बोलावो (साद आपो) छे, तेने हुं प्रतिसाद आपुं छुं अने ते जज्याअे उपस्थित रहुं छुं."

श्रीमती हिस्लोप नामनी परदेशी स्त्रीभक्तने थयेलो आ अेक अनुभव, स्वामी 'लोकनाथ' छे ते सिद्ध करे छे. हिस्लोप ज्यारे नाना हता त्यारे तेमना घरनी बहार बगीचामां दीवालनी पासे अेक सडैड कइनी, माथे सडैड वस्त्र बांधेला वृद्धनां तेमने दर्शन थया हता. वास्तविक रीते तेमनी उंमर

ધ્યાનમાં લેતા અને ઈશુ પરની અને તેમના ધર્મ પ્રત્યેની તેમની શ્રદ્ધા જોતા તેમને આ દર્શન થવાનું કારણ શું? પરંતુ તેમને આ દર્શન થયું.

જ્યારે તે સ્વામીના સંપર્કમાં આવ્યા અને તેમણે શિરડી સાઈનાથનો ફોટો જોયો, ત્યારે તેમને બન્ને અવતારની એકરૂપતા સમજાઈ અને બાળપણની તે ઘટના યાદ આવી. ભગવાન બાબાના સંપર્કમાં આવતા પહેલાં જ ઘણા વર્ષો પૂર્વે બાબાએ તેમને આશીર્વાદ આપ્યા હતા.

માર્કડેય પુરાણમાં લખ્યું છે કે, ભગવાન વિષ્ણુ જે પૃથ્વીના નાથ છે તે કલિયુગમાં દક્ષિણ ભારતમાં અવતાર લેશે, વિશ્વમાં શાંતિ સ્થાપશે. માનવજાતિના તારણહાર તરીકે લોકો તેમની ભક્તિ કરશે અને 'સત્ય' એ તેમનું નામ હશે.

॥ ૐ શ્રી સત્ય સાઈનાથાર્પણમસ્તુ ॥